thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२० ● अंक : १३ ● ३१ मार्च, २०१५ चैत्र शुक्ल एकादशी, सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

वैदिक मिशन मुम्बई द्वारा आयोजित वेद वेदान्त सम्मेलन सोल्लास सम्पन्न

सम्मेलन में महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित त्रैतवाद को ही परिपुष्ट किया गया

वदिक मिशन मुम्बई द्वारा दिनांक २१-२२ मार्च, २०१५ को आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई में वैदिक मिशन के अध्यक्ष डॉ. सोमदेव शास्त्री के संयोजन में वेद वेदान्त सम्मेलन सोल्लास सम्पन्न हुआ। जिसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा वेद और वेदान्त दर्शन से सिद्ध ईश्वर जीव प्रकृति तीन अनादि सत्ताओं को मान्यता देकर त्रैतवाद की सिद्ध में विविध विद्वानों द्वारा शोध पत्र पढ़े गये।

सम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने की। मुख्य अतिथि सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा विशिष्ट अतिथि श्री देवेन्द्रपाल वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. सारस्वत अतिथि स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. तथा श्री अरविन्द कुमार उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. थे। सम्मेलन में स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती स्वामी आर्यवेश जी श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, श्री अरविन्द कुमार, डॉ. रघुवीर वेदालंकार तथा महावीर मीमांसक जी आदि का शाल उढ़ाकर और मोती की माला पहिनाकर सम्मान किया गया। सभी अतिथियों ने अपने अपने सम्बोधन में महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त त्रैतवाद को ही परिपुष्ट किया।

वेदामृतम्

स संद्युमा स स्तुभा सप्त विप्रैः स्वरेणाद्रिं स्वर्योइनवग्वैः।
सखयुभिः फतिज मिन्द्र शुक्र बलं हवेश दरयो दराग्वैः।।

प्रस्तुत वेद मंत्र में सम्पूर्ण क्लेशों के मूल अविद्या के पर्वत को नष्ट करने की प्रेरणा दी गई है। अविद्या का पर्वत जो ज्ञान पर एक आवरण, असत्य सार रहित है उसका विदारण नितान्त कठिन है। प्रभु स्तोत्रों का उत्तमता से उच्चारण करने, काम-क्रोध-लोभ की दृष्टियों को रोकने, प्राप्त साधना से शरीर को नीरोग बनाने अपने को तप की अग्नि में तपाने और आत्म प्रेरणा से इसको नष्ट कर शक्तिशाली बना जा सकता है।

हम अविद्या के नाश से क्लेशों का नाशकर जीवन की सुखमय स्थिति को प्राप्त करें।

अज्ञान मन की रात्रि है जिसमें न चाँद है न तारे।

"1857 की क्रान्ति, स्वाधीनता आन्दोलन और महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती"

विद्या वाचस्पति वेदपाल वर्मा शास्त्री

लन्दन दैनिक टाइम्स का संवाददाता सरवेलिंग टाइन शिरौल जब भारत आया वह अपनी पुस्तक "अनरेस्ट इन इण्डिया" के पृष्ठ १६२-६३ पर लिखता है "दयानन्द की शिक्षाओं का सारा झुकाव हिन्दुत्व के सुधार की अपेक्षा विदेशी प्रभाव के प्रति सक्रिय विरोध की ओर अधिक है।"

अमेरिका के विख्यात योगी एण्ड्रो डेविड जैक्सन ने अपनी पुस्तक "हार्मोनिका" में अपने विचार प्रकट किए हैं कि "मुझे एक सार्वभौम अग्निपुंज दिखाई दे रहा है जो ईश्वर पुत्र दयानन्द सरस्वती द्वारा आर्यसमाज भाव नामक भट्ठी में सुलगाया गया है। उसे बुझाने के लिए अदूरदर्शी मूर्तिपूजक हिन्दुओं के साथ मुसलमान और ईसाई भी दौड़े किंतु वह किसी के बुझायें न बुझा बल्कि और प्रचण्ड होता गया।"

१८ जून १८५८ में महारानी लक्ष्मीबाई का अपनी कुटी में अंतिम संस्कार कर समर्थ गुरू गंगादास संत ने सन्त सेना का नेतृत्व करते हुए ग्वालियर में अंग्रेजी फौज के साथ युद्ध किया- जिसमें ७५३ संत सैनिकों का बलिदान हुआ। इस युद्ध में महारानी लक्ष्मीबाई और संतों का हत्यारा जनरल ह्यूरोज बुरी तरह घायल हुआ। (हिम द्वीप-राधापुरी-हापुड़ में सुरक्षित आन्दोलन प्रपत्रों के आधार पर प्राप्त फरवरी २००८ उद्घृत प्रो. राधेश्याम चौहान, क्रान्तिधरा के अमर गायक, बसन्त विहार-मेरठ) १८८१ की जनगणना में अंग्रेजों ने अल्पसंख्यकों को उभारा- क्योंकि वे महर्षि दयानन्द सरस्वती से भयभीत थे। महारानी विक्टोरिया ने डलहौजी से कहा-दयानन्द कोई महत्वपूर्ण संगठन खड़ा करने वाला है। वह संगठन आर्य समाज है। दयानन्द घूम घूम कर स्वराज्य स्थापना की चर्चा कर रहे हैं। इसलिए अल्पसंख्यकों को इनसे तोड़ना चाहिए। इससे यह संगठन कमजोर पड़ जायेगा। भारत में अंग्रेजी शासन के खिलाफ बहुत बड़ी बगावत शुरू होने वाली है। सिक्खों को भी इनसे अलग कर देना चाहिए। रिजर्वेशन (आरक्षण) देकर हिन्दू जाति को बांट दो जिससे भविष्य में हिंदू जाति कभी संगठित न हो सके। (इंग्लैंड के इण्डिया हाउस से प्राप्त एल.आई.यू. की रिर्पोट के आधार पर-क्रान्ति आन्दोलन के प्रखर प्रवक्ता राजीव दीक्षित, २६/७/२००७, मंगलवार-मेरठ)।

जब मैं दयानन्द की निर्भीक कार्यशैली की तरफ देखता हूँ-तो अनायास मेरा हृदय कह उठता है "दयानन्द" तू सचमुच ज्योति का पुंज है। परमात्मा की कृति का अनुपम योद्धा और राष्ट्र निर्माता है तू। देश जागरण और निर्माण में तेरा अनन्य प्रभाव है। (पी.एस.योगी, पूर्व चीफ इंजी. उ. प्र., ऋषि बोधांक १०-२-१६६१, पृष्ठ ६५)

लौह पुरूष सरदार पटेल ने महर्षि के प्रति अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा- "महर्षि दयानन्द सरस्वती के राष्ट्र प्रेम, उनके क्रांतिकारी हृदय, उनकी हिम्मत, उनके ब्रह्मचर्यपूर्ण जीवन का मैं सदा उपासक रहा हूँ। समाज की बुराइयों- कुरीतियों के विरूद्ध उनका क्रांति उद्घोष भारत की आत्मा है।" (गृहमंत्री, भारत सरकार, १६४७ दिसम्बर)

महात्मा गांधी कहते हैं-"कौपीनधारी, अखण्ड ब्रह्मचारी, अप्रतिम तेजस्वी दयानन्द ने भारत का कोना कोना छान मारा। उससे देश की दासता और समाज की दुर्दशा का नग्न चित्र स्वयं उसके सामने उपस्थित हो गया। महर्षि ने सोचा - ऋषि देश मुरझा रहा है। इस प्रकार एक दिन हिन्दु जाति का नाम तक मिट जायेगा। स्वराज्य के पांचजन्य शंख का ऐसा उद्घोषक, परम हितैषी अन्य व्यक्ति मिलना दुर्लभ है। ब्रिटिश राज्य को उखाड़ने में जनता के साथ सीधा सम्पर्क रखने का मार्ग महर्षि ने ही खोज निकाला है। मैं इसी मार्ग का यात्री हूँ। (सम्पादकीय ऋषि बोधांक- १ मार्च, १६६२, पृष्ठ १७)

५ अक्टूबर १८५५ में गढ़मुक्तेश्वर के मेले से दूर महर्षि के दीक्षागुरू स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में क्रांति आन्दोलन की एक सभा हुई थी जिसमें २५०० साधु-महात्मा उपस्थित थे। (सर्वखाप पंचायत शोरों के प्रपत्रों के आधार पर)

१८५७ के स्वातन्त्र्य संग्राम के अगुवा संयोजक चार वेद के अग्रणी संन्यासी थे। जिनमें प्रथम हिमालयवासी १६० वर्षीय स्वामी ओमानन्द, द्वितीय इन्हीं के शिष्य १२६ वर्षीय स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती, तृतीय इन्ही के शिष्य ७६ वर्षीय दण्डी स्वामी विरजानन्द जी मथुरा चतुर्थ इन्हीं के शिष्य ३३ वर्षीय स्वामी दयानन्द थे- जिन्होंने गुप्त रूप से सारे देश में घूम घूम कर साधुओं और योद्धाओं

शेष पृष्ठ.....७

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

राष्ट्र संवर्धन के लिए वर्तमान शिक्षा में आमूल चूल परिवर्तन अनिवार्य

हमारा भारत देश जो कभी विश्व गुरू था, सभी देशों के शिक्षार्थी हमारे देश में आकर अपनी ज्ञान पिपासा शान्त करते थे और कृतज्ञता का भाव प्रस्तुत करने में गौरव अनुभव करते थे। वहीं आज हमारे देश के विद्याभिलाषी विदेशों की ओर टकटकी लगाते हैं क्यों? इस पर सत्तासीन नेता सभी राजनेता और प्रबुद्ध नागरिक गम्भीरता से बिना किसी जोर दबाव के और भेदभाव के गंभीर चिन्तन करें।

महाभारत काल तक हमारा देश विद्या शस्त्रास्त्र व सभी प्रकार के वैभव से परिपूर्ण था। वह काल वैदिक शिक्षा का काल था।

शिक्षार्थी शिक्षार्थ गुरूकुलों गुरूआश्रमों में बिना किसी वर्ग जाति भेद के प्रवेश लेते थे। राजा और रंक के सभी बच्चे एक साथ गुरूचरणों में विद्यार्जन करते थे। गुरूजन विद्यार्थी को अपना अन्तेवासी बनाकर अपने अर्जित ज्ञान का उनमें अपने चरित्र व वाणी के द्वारा निष्पक्ष आधान करते थे।

दुर्दिन वहां से आरम्भ हुआ जब द्वापर युग में राजपुत्रों को पढ़ाने के लिए गुरूजनों को राजभवन में जाकर पढ़ाने को विवश होना पड़ा। विद्या जनसामान्य को प्रदान करने के विधान को तोड़कर राजपुत्रों को उच्च शिक्षा देने की विधा चलायी गयी। एकलव्य जैसे साधारण परिवार में जन्मे सुयोग्य पुत्र को सुयोग्य धनुर्धर घोषित करने के बजाय पाण्डुपुत्र अर्जुन को सुयोग्य घोषित करने का छल गुरू द्रोणाचार्य ने एकलव्य का अंगूठा-गुरू दक्षिणा के नाम-पर कटवा कर-किया था। इसके बाद हमारा पराभव आरम्भ हो गया।

हमारा देश विश्व में धन वैभव व विद्या में सबसे आगे था अतः अनेक विदेशी धन लोभी सर्वप्रथम यवन आक्रान्ताओं ने हमारे धन वैभव को लूटने के लिए हमारे देश पर अनेकों बार आक्रमण करके हमारे धन को लूटा व अपने देश को मालामाल किया। हमें कंगाल बनाया और हम पर अपना राज जमाया। उनके बाद अंग्रेज लुटेरे व्यापारी बनकर हमारे देश में घुसे हमें गुलाम बनाया और सदा गुलाम बनाये रखने के लिए हमारी शिक्षा व्यवस्था ही बदल डाली। हमारा इतिहास बदल डाला। देश की मूल जाति आर्य जाति को विदेशी आक्रान्ता घोषित करके द्रविण और आर्य का विभेद फैलाना प्रारम्भ किया। द्रविणों के मन में ऐसा विद्वेष आर्यो के प्रति भरा कि आजादी के ६७ साल बाद भी वह भेद मिटा नहीं। बल्कि और बढ़ गया है। शिक्षा व्यवस्था धूर्तता से ऐसी चलाई कि भारतीय सदैव रोजी रोटी के चक्र में ही उलझा रहे अपने स्वत्व को सोच ही न सके।

पराधीनता के दंश से पीडित दुखी जन मानस को सुखी बनाने की भावना से कुछ सुधी महापुरूषों ने प्रयास आरम्भ किये।

तब हमारी मातृशक्ति सर्वथा उपेक्षित कर दी गयी थी। नारी को शिक्षा से सर्वथा वंचित कर दिया गया था। वेद ज्ञान लुप्त हो गया था। पुराणादि धर्म ग्रंथ माने जाने लगे थे। फलतः परस्पर देवी देवताओं के नाम पर विद्वेष फैलाया जाने लगा। भगवान को मूर्तियों में सीमित कर दिया गया था। हमारे सौभाग्य से उस विकराल काल में महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने पराधीनता के मूल में इन सभी बुराइयों को देखा अतः सभी बुराईयों को पूरी तरह से हटाकर सुख समृद्धि से संगठित भारत बनाने का संकल्प संजोया और सर्वप्रथम वैदिक शिक्षा प्रसार के लिए गुरूकुलों विद्यालयों की स्थापना पर जोर दिया। इसी काल में सती प्रथा के विरूद्ध राजा राम मोहन राय, केशव सेन आदि ने आवाज उठायी थी तो छुआछूत जाति पांति के विरूद्ध ज्योति बा फुले आदि महापुरूषों ने आवाज उठायी थी। ऋषि दयानन्द ने इन सभी महापुरूषों को साथ लेकर सारे विकारों से रहित राष्ट्र बनाने का निश्चय किया। उन्होंने निश्चय किया कि हमारे जिन विचारों में एकरूपता है उसको एकजुट करके सभी बुराइयों से रहित स्वाधीन भारत बनाने का आन्दोलन चलाया जाये परंतु उनकी यह योजना सफल न हो सकी। सभी अपने अपने भावों के अनुरूप सुधार करने में लग गये।

सन् १८७५ में महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना आन्दोलन के रूप में की। इस आन्दोलन से घबराकर अंग्रेजों ने सन् १८८५ में सर ह्यूम के संरक्षण में कांग्रेस की स्थापना की और देश का स्वाधीनता आन्दोलन उसके संरक्षण में आरम्भ हुआ, आन्दोलन तेज हुआ। स्वराज्य आन्दोलन में आर्य समाज का सर्वाधिक भाग रहा। सौभाग्य से हमारा देश स्वतंत्र हो गया। अपना संविधान भी बन गया जिसमें महर्षि दयानन्द के सभी मन्तव्यों को समाहित कर लिया गया। आजादी के बाद अपनी स्वतंत्र सरकार जो बनी, उसने अपना सारा ध्यान देश की भौतिक समृद्धि में ही लगा दिया। चूंकि विदेशी शिक्षा ही से सारे नेता निष्णात थे। भौतिक समृद्धि बढ़ी परंतु हमारी नैतिकता का ह्रास होने लगा। आज हमारा देश सभी विकारों से परिपूर्ण है। भारत का मान, संस्कृति नष्ट हो रही हैं देश की अखण्डता व स्वतंत्रता पर खतरा बढ़ रहा है। भारत सरकार का दायित्व है कि वह इसपर गम्भीर चिन्तन करके सर्वप्रथम सच्चे इतिहास का आलेखन कराये उसे ही पढ़ाया जाये। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था बदलकर वैदिक शिक्षा शुरू की जाये तभी राष्ट्र सम्वर्द्धन सम्भव होगा।

आर्य समाज आन्दोलन में आजादी के बाद शिथिलता आ गयी शायद यह समझ कर कि महर्षि की स्वराज्य प्राप्ति की योजना सफल हो गयी। परंतु हमारी शिथिलता ने देश को विनाश के कगार पर खड़ा कर दिया है। महर्षि ने शिक्षा में पूर्ण सुधार लाने के लिए गुरूकुल विद्यालयों के खोलने का आह्वान किया था वे काफी खुले भी, उनसे सुधार हुआ जागृति आयी परंतु आजादी के बाद उन विद्यालयों की शिक्षा व्यवस्था अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था ने निगल ली। सरकार का सरकारी सहायता का व्यामोह ऋषि के मन्तव्य को पूर्ण करने में बाधक बन गया। अतः आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य का धर्म है कि वह राष्ट्र को विनाश से बचाने के लिए प्रतिबद्ध हो। प्रचलित विदेशी शिक्षा व्यवस्था को हटाकर वैदिक शिक्षा प्रसार के लिए तथा भारत का प्राचीन सत्य इतिहास बनाकर पढ़ाने के लिए एकजुट होकर भारत सरकार पर दबाव बनाये। अपने विद्यालय में वैदिक शिक्षा को अनिवार्य रूप से समाहित करें। जब तक यह विदेशी शिक्षा नहीं बदली जायेगी तब तक देशोन्नति की भावना स्वप्न ही बनकर रहेगी। पूर्ण विश्वास है सभी आर्य नर-नारी जागृत होकर वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को बदल कर वैदिक शिक्षा व्यवस्था की स्थापना के लिए प्रयत्नशील होंगे। सरकार को इसके लिए जगायेंगे और देश को विनाश से बचाने में समर्थ बनेंगे।

सम्पादक

सत्य का महत्त्व

-नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

सत्य बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप। सत्य का मनुष्य के जीवन में बहुत महत्त्व है इसलिए क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने आर्य समाज के पहले पांच नियमों में सत्य के महत्त्व को स्थापित करते हुए सत्य शब्द का प्रयोग किया है। चौथे नियम में तो स्पष्ट निर्देश दिया है कि ''सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।'' महर्षि दयानन्द ने सत्य को परिभाषित करते हुए कहा है ''जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहलाता है। व्यवहारभानु में देव दयानन्द मनुष्य के जीवन में सत्य के महत्व को स्थापित करते हुए लिखते हैं ''सब मनुष्यों को अत्यन्त उचित है कि झूठ को सर्वथा छोड़कर सत्य ही से सब व्यवहार करें, जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होकर सदा आनन्द में रहें।

सत्य के महत्व को स्थापित करते हुए वेद भगवान भी ''ऋृतस्य धीतिर्वृजनानि हन्ति'' ऋृ. ४/२३/८ अर्थात सत्य का आचरण पापों को नष्ट कर देता है। इसे दूसरे शब्दों में कहें तो सत्य का आचरण मनुष्य को पापों से दूर कर देता है। झूठे अंधेरों की चट्टानें कितनी मजबूत क्यों ना हों सत्य के सूर्य के उदय होने के आभास मात्र से टूटकर खत्म हो जाती हैं। सत्य के सामने झूठ कभी नहीं टिक सकता और अंत में सदा सत्य की विजय होती है। सत्य की महिमा का वर्णन करते हुए महाभारत में कहा गया है ''सत्य स्वर्गस्य सोपानम्।'' अर्थात् सत्य स्वर्ग की सीढ़ी है। मनुष्य की हर मनोकामना सत्य से ही पूरी होती है। सत्य का मार्ग चाहे जितना भी कांटों से भरा, कष्ट से परिपूर्ण क्यों ना हो, लेकिन सत्य के मार्ग पर चलकर मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेता है। सत्य से ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति होती है अतः मनुष्य को कभी किसी भी विपरीत परिस्थिति में भी सत्य को नहीं छोड़ना चाहिए। सत्य वह दिव्य दीपक है जो मनुष्य के आन्तरिक तम अविद्या को नष्ट-भ्रष्ट कर देता है।

जो व्यक्ति सदा सत्य बोलता है समाज के लोग सदा उसकी बातों पर विश्वास करते हैं। सत्यवादी के साथ लोग निःशंक और निश्चित होकर व्यवहार करते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि सत्यवादी व्यक्ति हमें धोखा नहीं देगा। इससे समाज के लोगों को सुख मिलता है। सत्यवादी सदा निर्भीक और चिन्तामुक्त होकर आनन्द से जीता है, उसे कभी किसी से डर नहीं लगता। सत्यवादी को अपने हर कार्य के लिए परिवार-समाज के लोगों का समर्थन मिलता है और समाज का समर्थन मिलने से उसका उत्साह बढ़ता है। वह सदा प्रसन्न रहता है। सत्य बोलने वालों की समाज में प्रतिष्ठा बढ़ती है और पूर्ण सत्यवादियों का यश युगों तक बना रहता है। सत्य बोलने वाले को कभी किसी के सामने बोलने में डर नहीं लगता और उसे कभी मानसिक तनाव नहीं होता, अच्छी निश्चिंत नींद आती है। शरीर के सभी अंग-प्रत्यंग स्वस्थ रहते हैं। सत्यवादी सदा प्रसन्न रोगमुक्त, निश्चित रहता है सत्यवादी की सभी योजनाएं पूरी होती हैं, क्योंकि उसे अपनी सभी योजनाओं के लिए सब परिवार समाज का सहयोग मिलता है क्योंकि जनता को उसके सत्य आचरण के कारण पूरा विश्वास होता है कि सत्यवादी उनके सहयोग का सदा सदुपयोग ही करेगा। इसलिए सत्यवादी का भविष्य सदा उज्ज्वल होता है। सत्य बोलने से परिवार समाज और राष्ट्र में परस्पर विश्वास और प्रेम का वातावरण बनता है जिससे सभी को सुख मिलता है।

सत्य के महत्त्व को स्थापित करते हुए ही वेद भगवान ने मनुष्य मात्र को आदेश दिया 'वाचः सत्यमशीय।' अर्थात मैं अपनी वाणी में सत्य को प्राप्त करूँ। इससे आगे बढ़कर सत्य के साथ माधुर्य को धारण करने का निर्देश देते हुए कहा गया सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् ब्रूयात्सत्यमप्रियम। मनुस्मृति! अर्थात् सत्य बोलो, प्रिय भाषा में बोलो, सत्य को कटु भाषा में मत बोलो। क्योंकि मनुष्य का शरीर आत्मा का मंदिर, सर्व अन्तर्यामी परमात्मा का निवास है। अतएव इसे सदा सत्य आचरण से स्वच्छ रखें और कभी झूठ बोलकर गंदा न करें। सरलता को रथ और सत्य को शस्त्र बनाकर जीवन के संग्राम में कूद पड़ो क्योंकि सत्यमेव जयते नानृतम्' सदा सत्य की ही विजय होती है, असत्य की नहीं। इसलिए मनुष्य के लिए यही श्रेयस्कर है कि वह जीवन में सदा सत्य व्रतों को धारण करे।

-५०२ जी, एच-२७ सेक्टर-२०
पंचकुला

thearyasamaj.org

धरोहर.....

सरलता सौम्यता सादगी की प्रतिमूर्ति-

सादर श्रद्धांजलि-पं. राजवीर शास्त्री व्याकरणाचार्य

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

आर्य समाज के इतिहास में बलिदानी, तपस्वी-विद्वान-उपदेशक-भजनोपदेशक-नेता-आर्य कार्यकर्ता इतने सप्त ऋषि है जो अपने अपने क्षेत्र में सेवा से प्रसिद्धि को प्राप्त होकर अमर हो गये और प्रेरणा पुंज बन गये। ऐसे ही साक्षात ऋषि श्रेणी के पाणिनी वैयाकरणि विद्वान आचार्य उपदेशक लेखक, अध्यापक के रूप में प्रसिद्धि को प्राप्त हुए आर्य जगत के विद्ववर्य पं. राजवीर शास्त्री व्याकरणाचार्य, आपके विषय में उनके समकालीन विद्वान लेखक अपने संस्मरण लिखेंगे।

मैं तो भावनात्मक रूप में आपसे शिष्य के रूप में जुड़ा और आत्मीय परिवार का सदस्य बनकर आज तक आपके विभिन्न रूपों से परिचित हुआ। आने वाली पीढ़ी के लिए अवगत कराना चाहता हूँ कि प्राचीन काल के विद्वानों कवियों की जीवनी से विदित होता है कि वे बड़े तपस्वी, त्यागी, संयमी, साधु ब्रह्मचारी रहकर साहित्य साधना करते थे। लेकिन इस कलियुग के मंहगाई कालचक्र में भी एक तपस्वी पाणिनी-पतंजलि-कात्यायन त्रिमुनि की परम्परा में व्याकरण को सहज भाव से अपने शिष्यों को पढ़ाकर आत्मतुष्टि अनुभव करता है ऐसे अनेक उदाहरणों से पुष्टि होती है आपका बाल्यकाल अभावों में रहा जिसे तपस्वी बनकर भावयुक्त कर लिया। पुनः समय आया अर्थोपार्जन का उसे माँ सरस्वती उपासना में सार्थक कर लिया पूरा जीवन साहित्य साधना में महर्षि कणादि की तरह जिया और महर्षि गौतम की तरह संजोया। षड्दर्शनों के साक्षात् कृत धर्मा ऋषि के रूप में आपकी तपस्या किसी से कम नहीं थी। यदि तुलनात्मक अध्ययन करेंगे तो कलकाल में विकराल स्वरूप होते हुए भी वे निहाल ही मिलेंगे। आचार्य जी का जन्म मेरठ जिले की हापुड तहसील से उत्तर दिशा में लगभग १० किमी. की दूरी पर काली नदी के किनारे बसा मुरादपुर ग्राम में हुआ था आपके पिता श्री ला. शिवचरण जी आर्य समाजसेवी परोपकारी एवं धर्मात्मा के रूप में प्रतिष्ठित थे आपका परिवार हापुड़ चला गया था। माता जी फजलगढ़ ग्राम की थीं जो मोदीनगर के निकट हापुड़ मार्ग पर उत्तर दिशा में स्थित हैं। आपकी माता जी का कोई भाई नहीं था और बड़ी जमींदारी थी अतः माता जी आपके नाना जी के वृद्धत्व काल में आपके २ बड़े भाई लेकर घर पर ही रहने लगी थी। आपके पिता जी आपको विद्वान तपस्वी बनाना चाहते थे अतः गुरूकुल झज्जर में प्रवेश दिला दिया वहां खर्च पूर्ति हेतु स्वयं गौशाला में सेवा करने लगे और पुत्र को योग्य विद्वान बनने पर घर पर चले आये। आचार्य जी पढ़ने में कुशाग्र बुद्धि थे अतः पढ़ना और पढ़ाना दोनों ही प्रारम्भ हो गये। व्याकरण इतना अच्छा था कि गुरूकुल झज्जर में आचार्य विश्वप्रिय जी उपाचार्य के पश्चात् आपने ही कई पीढ़ियां तैयार की हैं आपसे व्याकरण पढ़े छात्र आज भी आपके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। आचार्य बल्देव जी एवं स्वामी इन्द्रवेश जी को आपने सिरसागंज मैनपुरी जिले में रहकर पढ़ाया था। स्वामी ओमानन्द जी वहीं पर जाकर घी भिजवाते रहते थे। कभी कभी एकान्त में बैठकर आप अपनी बीती कहानी सुनाते थे तो आंखों में आंसू आ जाते थे।

आप परिवार में रहते हुए भी सन्यासी की तरह रहे गुरूकुल झज्जर के पश्चात् आपने वाराणसी की मध्यमा परीक्षा हापुड़ चण्डी पाठशाला से दी उस समय स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती आर्य समाज हापुड़ में रहते थे। आपके रहने की व्यवस्था आर्य समाज में इसलिए कराई कि चण्डी पाठशाला में सनातनी बच्चे थे, उनका प्रभाव इन पर न पड़े वे जन्मना पण्डित पुत्र को ही वरीयता देते थे। अतः स्वामी जी का शास्त्री जी सदैव ऋण मानकर सम्मान करते थे।

मेरा परिचय छात्रावस्था में ही गुरूकुल तातारपुर में हो गया था आपसे आत्मीयता इसलिए अधिक रही कि मुरादपुर ग्राम में कई रिश्तेदारी के सम्बन्ध है। गुरूकुल का निकटतम सहयोगी ग्राम है उसी रूप में शास्त्री जी सदैव स्नेह प्रदान करके आत्मीय भाव से जुड़े रहे। मुरादपुर में आर्य समाज की स्थापना करके जब वहां प्रचार में लोगों को बताया कि आपके ग्राम के वेदों के विद्वान आज पूरे भारतवर्ष में सम्मानित प्रतिष्ठित विद्वान है तो लोगों को अति प्रसन्नता हुई और दर्शन करने चाहें। इधर मैंने शास्त्री जी से कहा कि ग्राम के कुछ लोग आपके दर्शन करना चाहते हैं तो बोले वहां आर्य समाज का उत्सव कराओं मैं तब चलूँगा फिर वैसा ही किया गया और लोगों पर आपका बहुत प्रभाव पड़ा। फजलगढ़ मामा जी के यहां पर रहते हुए अधिक समय निवास किया फिर मोदीनगर में ही भूपेन्द्रपुरी में मकान बना लिया और उसका प्रयोग आपने आश्रम की तरह आजीवन किया। आपको प्रसिद्धि आर्ष प्रचार ट्रस्ट द्वारा पुस्तक लेखन प्रकाशन एवं मासिक पत्र दयानन्द संदेश के सम्पादन से मिली।

आपकी मासिक पत्रिका में शंकाओं का समाधान एवं खण्डन मण्डनात्मक लेख उस काल में प्रमुखता से रहे योगदर्शन-वेदभाषाभाष्य एवं काल अकाल मृत्यु तथा सृष्टि संवत् आदि आदि विशेषांक निकालकर आर्य जगत् को भ्रांति से मुक्त किया "वैदिक शब्दकोष" आपका अमर ग्रंथ बन गया। आपने बताया कि पूरा १० वर्ष का समय इसे तैयार करने में लगा था अब आप ही बतायें क्या यह महर्षि कणादि की तरह का संकल्प नहीं था जिस कार्य में लग गये पूरा होने तक "अहर्निशं सेवामहे" का पालन करते रहे। गुरूकुल तातारपुर की स्थिति वर्ष १९७२-७४ तक कमजोर हो गई मार्च १९७४ में ताले डालकर गुरूकुल बन्द कर दिया। जून के अंतिम सप्ताह में योजना बनाकर ग्राम एवं गुरूकुल की कार्यकारिणी ने मुझे चलाने का कार्यभार दे दिया। मुझे न अनुभव था न इस विषय में कोई योजना थी लेकिन बड़ों की बात सिर माथे पर स्वीकार करके ओखली में सिर दे दिया तो मूसल से क्या डरना। जो. १० तारीख तक मात्र ४-५ छात्र ही थे मैं बैठा हुआ उन्हें संध्यामंत्रों का उच्चारण करा रहा था तभी प्रभु कृपा से अ. राजवीर शास्त्री आ गए आशीर्वाद लेकर कुशलता पूछी तो बोले क्या सेवा करूँ आपकी मैंने कहा सेवा नहीं गुरू जी छात्र प्रवेशार्थ भिजवाओ कितने छात्र भेज दूँ मैंने उपहास समझा फिर कहा अधिक से अधिक आप जितने भी भेज देंगे जिस कक्षा में भी भेजें स्वीकार है तब शास्त्री जी स्वयं २ दिन में अपने ग्राम से ही १० छात्र लेकर आये थे। जिसमें ६ तो घर से ही ३ भाइयों के २-२ पुत्र थे जिसमें आज २ भाई प्रसिद्ध हैं आचार्य हरिकृष्ण जी गुरूकुल कुण्डा बिजनौर तथा डा. दिनेश चन्द्र शास्त्री वेदविभाग गुरूकुल विश्व विद्यालय कांगड़ी हरिद्वार लोकेश शास्त्री भी किठौर में अध्यापक हैं। तब से लेकर आज तक गुरूकुल उन्नति कर रहा है। यह शास्त्री जी के ही आशीर्वाद का सुपरिणाम है। आचार्य जी के परिवार में कोई विवाह हो अथवा कोई कार्यक्रम तो मुझे परिवार के सदस्य की तरह आज भी स्मरण किया जाता है आपकी माता जी का देहावसान जब हुआ था तो शान्तियज्ञ मैंने ही करवाया था। शास्त्री जी बोले- प्रार्थना कराओ आत्मा की शांति के लिए मैं आशय नहीं समझ पाया तब स्वयं शास्त्री जी ने ही आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना की इतने सरल कि इन्हें देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि ये इतने बड़े विद्वान अथवा लेखक वैयाकरणि भी हो सकते हैं। कोई दिखावा, अहंकार नहीं था। जिला सभा गाजियाबाद का गठन हुआ आपको संरक्षक बनाया गया। डा. जयवीर सिंह, डा. श्याम लाल आर्य, आचार्य जी को सत्संग प्रवचन के लिए ले जाते थे जब लोग देखते तो लगता था कि इनके साथ कोई कार्यकर्ता अधिकारी है। लेकिन जब भाषण देते तो लोग अपनी बुद्धि पर पश्चाताप करके क्षमा याचना करते थे। साधारण सभा निर्वाचनों में कभी कोई पद नहीं लिया करते थे कि सभाओं में झगड़े होने से पठन-पाठन में बाधा आती है साथ ही व्यक्ति एक पक्ष से बंध जाता है। आत्मा की आवाज पर चाहकर भी कार्य नहीं कर पाता अतः मुझे कोई पद नहीं चाहिए। मोदीनगर तिवड़ा रोड आर्य समाज में तो उन्हें सर्वसम्मति से पद दे दिया करते थे। आप सदैव शिक्षाविद् के रूप में ही कार्य करते रहे, दिल्ली-हरियाणा-गुरूकुल झज्जर-गुरूकुल गौतमनगर एवं गुरूकुल पौंधा देहरादून आदि संस्थाओं में पढ़ाया है। वेद प्रचार संस्कार यदा कदा करते थे लेखन में अधिक समय व्यतीत होता रहा गुरूकुलों की अथवा संस्कृत महाविद्यालयों की प्रतियोगिताओं में व्याकरण विषयक शास्त्रार्थ आपसे तैयार कराकर बच्चों को स्मरण कराते थे और वे विजयी होते थे। यह आपकी बुद्धि का ही चमत्कार था। आपका सम्मान आर्य जगत् आपकी योग्यता के अनुरूप नहीं कर पाया। आर्ष प्रचार ट्रस्ट के अध्यक्ष के रूप में लंबे समय तक सेवा की है आपके सुपुत्रों का विवाह भी आर्य परिवार में ही हुआ है। मुझे बुलाकर कई बार कहते थे कि कभी घर आओ यज्ञ करो बच्चों को समझाओं कुछ संस्कार ही ठीक होंगे। आपका अतिथि यज्ञ भी हो जायेगा। मेरा यह दुर्भाग्य ही रहा कि हां जी के आगे कुछ क्रियान्वित न हो सका। गत वर्ष दर्शन करने मोदीनगर घर पर आया था तब स्वास्थ्य ठीक नहीं था लेकिन बुद्धि कार्य ठीक कर रही थी। पुरानी स्मृतियां नवीन कर रहे थे और संदेश भी दे रहे थे कि आर्य समाज ग्रामीण स्तर पर वेद प्रचार से ही सुरक्षित रहेगा। आर्य वीर दल क्या कर रहा है? स्कूल कालेजों में जाओ युवकों में चरित्र निर्माण की आवश्यकता है, गुरूकुलों में व्याकरण-वेद-कम्प्यूटर जरूर पढ़वाना, एक बात और चलते चलते बुलाकर कहा था कि विजय आर्य को भी बीच बीच में आकर सम्भालना। मुझे इन्होंने सम्भाला है आप इन्हें सम्भालते रहना बहुत सेवा कर रहे हैं यह बात जब किसी वृद्ध माता पिता के मुख से सुनता हूँ तो मुझे लगता है कि पुत्रों ने अपने कर्तव्य का पालन करके अपना सौभाग्य बढ़ाया है उसके लिए तो पुत्रों की प्रशंसा होनी चाहिए। अब ऐसा वैयाकरण कहां से आयेगा? यह प्रश्न आर्य समाज के विद्वानों एवं गुरूकुलों के आचार्यों के समक्ष है इतनी सरलता सौम्यता सादगी सदाचार स्वाध्याय प्रेमी का विदाई समारोह सभी के लिए चिन्तनीय रहा। सभी विद्वान कह रहे थे कि मुझे भी पढ़ाया है इससे हमारे जिले का गौरव बढ़ा हैं। हापुड़ क्षेत्र का गौरव बढ़ा और उ.प्र. नहीं अपितु भारतवर्ष की पुण्य धरा उनके आने से धन्य हुई जाने से खाली तो नहीं हुई उन्होंने अपने बाद की पीढ़ी तैयार की है अब तो हम सभी का नैतिक कर्तव्य है कि हम सभी मिलकर उनकी स्मृतियों को सुरक्षित करके आने वाली पीढ़ी को प्रेरणा प्रदान कर आचार्य जी को अमर करें, उनकी परम्परायें सुरक्षित करें। उनके लिखे लेखों को लिपिबद्ध करके सभी सम्पादकीय संग्रहीत करें और उनका जीवन परिचय स्मृति ग्रंथ के रूप में प्रकाशित हो। मैं उनके प्रति स्वयं एवं गुरूकुल पूठ परिवार तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

संचालक
गुरूकुल पूठ,
गढ़मुक्तेश्वर- हापुड़
मंत्री-आर्य प्रतिनिधि सभा,
उ.प्र. लखनऊ
मो.९८३७४०२१९२

thearyasamaj.org

हिन्दुओं की दुर्बलताएं

-कृष्ण चन्द्र गर्ग

हिन्दुओं में कुछ कमियां और कमजोरियां हैं जिनके कारण वे भारत में ८० प्रतिशत होते हुए भी प्रभावहीन हैं। प्रस्तुत लेख में उन कमियों पर विचार किया है ताकि हिन्दु जाति उन पर चिन्तन करके अपनी कमजोरियों को दूर करके उन्नत हो तथा देश और विश्व में प्रभावशाली भूमिका निभा सके।

१. **धर्मगुरुओं के गलत उपदेश**- हिन्दुओं के धर्मगुरु उन्हें वीर, बहादुर, पराक्रमी, स्वाभिमानी, देशभक्त तथा परोपकारी बनने का उपदेश नहीं देते। वे उन्हें अपने बल, बुद्धि का प्रयोग करना भी नहीं सिखाते, वे उन्हें अन्धविश्वासी बनाकर गुरु पर आश्रित रहना सिखाते हैं। उन्हें शुभ कर्म करने की शिक्षा देने के बजाए, अच्छे-बुरे सब प्रकार के कर्म गुरु को अर्पण करने का उपदेश देते हैं। इस प्रकार हिन्दू मानसिक और बौद्धिक रूप से कमजोर और कायर बनकर गुरु के सहारे बैठ जाते हैं और उसे दक्षिणा रूप में धन देते रहते हैं।

२. **ईश्वर की गलत अवधारणा** - ईश्वर निराकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्व अन्तर्यामी है। वह सारी सृष्टि को बनाने वाला है। वह हमारे सब अच्छे, बुरे कार्यो को देखता और जानता है तथा उनके अनुसार हमें सुख और दुख के रूप में फल देता है। ईश्वर के इस सत्य स्वरूप को न मानकर मिट्टी के खिलौनों को ईश्वर मान लेना, उनके आगे हाथ जोड़ देना, सिर झुका देना कोरी अज्ञानता के सिवाए और क्या है।

३. **कर्म व्यवस्था को स्वीकार न करना** - जैसा बुरा कर्म मनुष्य करता है वैसा ही फल उसे ईश्वर की व्यवस्था से मिलता है। ईश्वर पूर्ण न्यायकारी है, वह कोई सिफारिश नहीं मानता, रिश्वत नहीं लेता। अच्छे और बुरे कर्मो के फल भोगकर ही समाप्त होते हैं। उनसे बचने का कोई भी उपाय नहीं। फिर भी हिन्दू जाति कोई विपत्ति आने पर उसका कारण ग्रहों-नक्षत्रों को मानती है और इधर-उधर ढोंगियों से उपाय करवाती फिरती है। ज्योतिषी के नाम पर ये ढोंगी लोग ऐसे मानसिक रूप से कमजोर लोगों को झूठे आश्वासन देकर उनका धन लूटते हैं।

४. **धर्म की गलत अवधारणा** - मन, वचन, कर्म से सत्य का आचरण, पक्षपात रहित न्याय, परोपकार, सदाचार आदि ही धर्म है। पत्थर की मूर्ति पर दूध डालना और पेट भरे पण्डित को खिलाना, जनेऊ पहनाना, चोटी रखना आदि कर्म धर्म नहीं हैं। धर्म का सम्बन्ध शुद्ध आचरण से है, दिखावे और आडम्बर से नहीं।

५. **मूर्तिपूजा को ईश्वर की पूजा मानना** - मूर्तिपूजा ईश्वर की पूजा नहीं है। ईश्वर की पूजा तो हो ही नहीं सकती। उसे हमारी पूजा की जरूरत भी नहीं। वह कभी प्रसन्न या अप्रसन्न नहीं होता। वह तो सदा आनन्द स्वरूप है। मूर्तिपूजा व्यर्थ है। इसने आज तक हिन्दुओं को दिया ही क्या है ? मूर्तिपूजा के कारण हिन्दू जड़बुद्धि, विवेकहीन और शुभ कर्म विहीन हो गए हैं। हजारों मन्दिरों और मूर्तियों को मुसलमान हमलावरों और शासकों ने तोड़ा और लूटा हैं। कोई एक मूर्ति किसी आक्रमणकारी की एक टांग भी न तोड़ सकी। अनेक लड़ाइयों हिन्दुओं ने मूर्ति में शक्ति के झूठे विश्वास के कारण मुसलमानों से हारी हैं जिनके परिणामस्वरूप हिन्दुओं को भयानक रक्तपात, लूटपाट और दासता झेलनी पड़ी है।

६. **गलत और प्रक्षिप्त साहित्य** - हिन्दुओं ने अपने असली और सही ग्रन्थ चार वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद को तो भुला दिया है गप्पों से भरे अठारह पुराणों को अपना लिया है। पुराणों के अन्दर ज्यादातर बातें झूठी, असम्भव, अनैतिक और अश्लील हैं हिन्दू बेशक इन पुराणों को पढ़ते तो बहुत कम हैं पर पण्डित लोग इन्हीं पुराणों के आधार पर कथा-वार्ता और उपदेश करते हैं। हिन्दू ऐसे उपदेशों को ही सुनते हैं, उन पर विश्वास करते हैं। ऐसे उपदेशकों को विद्वान और पुराणों को ही असली धर्म ग्रन्थ मानते हैं। जैसा साहित्य वैसी बुद्धि। इसलिए हिन्दुओं की बुद्धि तार्किक नहीं है। हिन्दू साहित्य की दूसरी बड़ी समस्या है कि रामायण, महाभारत आदि इतिहास ग्रन्थों में बड़ी भारी मिलावट है जैसे गंगा गंगोत्री से चली तो पूरी तरह स्वच्छ और पवित्र है परन्तु आगे आकर गन्दगी मिलने से दूषित हो गई हैं। पर हिन्दू इस तथ्य को स्वीकार नहीं करते, करते भी तो नीर-क्षीर करने की जरूरत नहीं समझते। इसलिए हिन्दू अविद्या-अन्धकार में फंसे रहते हैं।

७. **झूठी आस्था** - हिन्दुओं में तार्किक बुद्धि और वैज्ञानिक सोच का अभाव है। आस्था के नाम पर वे बुद्धि को ताक पर रखकर हर गलत बात को सही और असम्भव को सम्भव मान लेते हैं। झूठ मनुष्य को उन्नति की ओर नहीं ले जा सकता, वह तो अवनति की ओर ही ले जाता है। रेत को खाण्ड मानने से वह खाण्ड नहीं बन जाता। आस्था सत्य पर ही आधारित होनी चाहिए, झूठ पर नहीं। इसीलिए हिन्दू भ्रमजाल में फंसे रहते हैं।

८. **सभी मजहब एक से हैं** - की झूठी धारणा - प्रायः करके, हिन्दू माने बैठे हैं कि सभी मजहब एक ही सत्य ईश्वर की ओर ले जाते हैं। यह बात उतनी ही गलत है जितनी कह देना कि चण्डीगढ़ से सभी रास्ते दिल्ली को जाते हैं। सभी सम्प्रदायों में ईश्वर, जीवात्मा, कर्मफल, पुनर्जन्म आदि की अवधारणाएं अलग-अलग हैं। मुसलमान तो गैर-मुसलमान को यातनाएं देना और जान से मार देना स्वर्ग में जाने का साधन मानते हैं। हिन्दुओं को छोड़ सभी सम्प्रदाय अपने-अपने सम्प्रदाय को सबसे बढ़िया बताते हैं और उसे बढ़ाने का प्रयास करते हैं। वैदिक धर्म की मान्यताएं सर्वश्रेष्ठ होते हुए भी हिन्दू उनसे अनभिज्ञ हैं और जानने की इच्छा भी नहीं रखते। सरकार द्वारा प्रसारित 'सर्वधर्म समभाव' की झूठी धारणा को हिन्दू गले लगाए हुए हैं और झूम-झूम कर झूठा गीत गाया जाता है मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना। इसलिए हिन्दू सदा घटाओं की स्थिति में रहे हैं, इन्होंने कभी बढ़ाओं की ओर प्रयास ही नहीं किया ।

९. **मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा** - वेद ने ईश्वर को शरीर रहित (अकायम), अजर, अमर, अजन्मा, नित्य और पवित्र बताया है। परन्तु हिन्दुओं ने अपनी कल्पना से अलग-अलग तरह के भगवान बना लिए हैं। ईश्वर का विषय मन और आत्मा से सम्बन्धित है परन्तु मूर्तिपूजकों ने इसे आँख का विषय बना लिया है। पण्डितों द्वारा मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा का ढोंग भी हिन्दुओं को समझ में नहीं आता। साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति भी जानता है कि पत्थर की मूर्ति में न तो देखने-सुनने की शक्ति है, न उसमें कुछ समझने या करने की शक्ति है, न ही उसमें प्राण पड़ सकते हैं। पुजारी तो धन ऐंठने के लिए हिन्दुओं को बेवकूफ बनाते हैं। पर हिन्दू क्यों मूर्ख बनते हैं ???यह बात समझ से परे है।

१०. **गरीबों के प्रति सहानुभूति की कमी** - हिन्दुओं में दान देने की प्रवृत्ति तो है, पर देते गलत जगह पर हैं। वे निठल्ले और पेट भरे पण्डितों को दान देते हैं जो महापाप है। दान तो जरूरतमन्द को और विद्या के प्रसार के लिए देना चाहिए। बेरोजगारों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने चाहिएं, कल-कारखाने लगाने चाहिए। ईश्वर के नाम पर मन्दिर में देना अपने आपको धोखा देना है क्योंकि ईश्वर देता है, लेता नहीं।

११. **हिन्दुओं में अज्ञानता और अन्धविश्वास** - अज्ञानता और अन्धविश्वास के कारण हिन्दू झूठे कर्मकाण्डों में फंसे हुए हैं। जो मर चुके हैं उनके लिए वे श्राद्ध करते हैं, ईश्वर-भक्ति के नाम पर जगराता करते है। ईश्वर को खुश करने के लिए वे पेड़-पौधों और नदी-तालाबों को पूजते हैं, ईश्वर का मनुष्य रूप में आना-जाना मानते हैं। तथाकथित ज्योतिषियों से वे अपना भूत और भविष्य पूछते फिरते हैं, दुख तकलीफ को टालने के लिए धागे-तावीज, जन्त्र-तन्त्र करवाते फिरते हैं।

१२. **भौंडे गीत** - हिन्दू औरतें कीर्तनों में बड़े घटिया किस्म के, बेतुके, बेसिर-पैर के गीत गाती हैं। उन्हें वीरता के सदुपदेश देने वाले, सत्य इतिहास बताने वाले सार्थक गीत गाने चाहिएं।

१३. **जगराते**- पाप कर्म- हिन्दुओं में जगराते की कुप्रथा पिछले ४० या ५० वर्षो से आरम्भ हुई है। ईश्वर भक्ति के नाम पर लाउडस्पीकर की ऊँची आवाज में रात भर घटिया किस्म के गीत गाते हैं। फिर घटिया, असम्भव, विनाशकारी कहानी कहते हैं। साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति भी इन जगरातों की निस्सारता को समझ सकता है, तो फिर हिन्दू क्यों नहीं समझते ?

१४. **जातपात** - जन्म की जातपात ने हिन्दू समाज को बांट दिया है, बेहद खोखला और कमजोर किया है। जातपात की बात पूरी तरह समाप्त होनी चाहिए। सभी की एक जाति-मनुष्य जाति-समझी जाए।

१५. **इतिहास को भुला दिया** - इतिहास से सीख लेकर किसी भी समाज को आगे की रणनीति बनानी चाहिए। अगर आप इतिहास से सबक नहीं सीखते तो आपके साथ फिर वही कुछ होगा जो पहले हो चुका है। मुसलमानों ने हिन्दुओं पर आठवीं सदी से लेकर अठारहवीं सदी तक अथाह अत्याचार किए हैं। उन्होंने हजारों मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़ा। वहां से सोना, चाँदी, हीरे, जवाहरात के रूप में बेहद धन लूटा। उन्होंने मन्दिरों के स्थान पर मस्जिदें बना दीं, पुजारियों को गाजर-मूली की तरह काटा, करोड़ों की संख्या में हिन्दुओं का कत्लेआम किया, करोड़ों हिन्दुओं को तलवार के जोर से मुसलमान बनाया, लाखों हिन्दू महिलाओं से बलात्कार किया। अब भी पाकिस्तान, बांग्लादेश, कश्मीर आदि स्थानों पर जहां मौका लगता है वे वही कुछ कर रहे हैं। १९४७ में जब पाकिस्तान बना था। तब पाकिस्तान में हिन्दुओं की आबादी २० प्रतिशत के लगभग थी और अब १ प्रतिशत रह गई है। बंगलादेश में तब ३० प्रतिशत हिन्दू थे अब ७ प्रतिशत रह गए हैं। कश्मीर में हिन्दुओं पर अत्याचार किए और लगभग सवा तीन लाख हिन्दुओं को कश्मीर छोड़ने पर मजबूर कर दिया। पर हिन्दुओं ने इन सब घटनाओं से कोई

शेष पृष्ठ.....५

thearyasamaj.org

पृष्ठ.....४ का शेष

सबक नहीं सीखा। हिन्दू अपने मित्र और शत्रु में अन्तर नहीं कर पाते। जो उन्हें समझाता है उसे वे अपना शत्रु मानते हैं और जो उन्हें बहकाता है उसे वे अपना मित्र मानते हैं। यह बहुत ही दुख का विषय है।

१६. **हिन्दुओं में नेतृत्व और संगठन का अभाव** - हिन्दुओं का कोई तगड़ा नेता नहीं है जो सारी हिन्दू जाति को संगठित और सशक्त बना सके।

१७. **कब्र पूजा** - हिन्दू मुसलमानों की कब्रों से खैर मांगते फिरते हैं, ये वे कब्रें हैं जिनमें हिन्दुओं पर अत्याचार करने वाले मुसलमानों को कभी दबाया गया था। यह मूर्खता की पराकाष्ठा है, हिन्दू वीरों का अपमान है और अपनी जाति से गद्दारी है। यहां कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं ----

अजमेर की दरगाह शरीफ में सूफी सन्त मुइनुद्दीन चिश्ती की कब्र है। ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती (गरीब नवाज) का जन्म ११४१ में अफगानिस्तान में हुआ था। वह मुहम्मद गौरी के साथ भारत आया था। उसने भारत आकर ७०० हिन्दुओं को मुसलमान बनाया था। अजमेर में जिस स्थान पर दरगाह है वहां पर पृथ्वीराज चौहान का राज्य था। मुहम्मद गौरी पृथ्वीराज चौहान को पकड़कर उसकी आँखें निकालकर उसे बन्दी बनाकर अपने साथ अफगानिस्तान ले गया था।

बहराइच (उत्तर प्रदेश) के पास मसूद गजनी की मजार है। मसूद गजनी, सोमनाथ मन्दिर पर हमला करने वाले महमूद गजनवी का बेटा था। उसने १०३३ में बड़ी सेना के साथ भारत पर आक्रमण किया था। जून १०३३ में बहराइच के मैदान में मसूद गजनी की और भारत के हिन्दू राजाओं की सेनाओं के बीच जबरदस्त लड़ाई हुई। लड़ाई में मसूद मियां की सेना की हार हुई तथा वह स्वयं भी मारा गया। मुसलमानों ने उसे वहीं दबा दिया तथा उसे गाज़ी की पदवी दे दी। मुसलमानों में गाजी की पदवी सबसे बड़ी पदवी मानी जाती है। यह पदवी उसे दी जाती है जिसने गैर-मुसलमानों का कत्लेआम किया हो। वहां पर मुसलमान हर वर्ष इकट्ठे होते हैं और त्यौहार मनाते हैं। दुख और आश्चर्य की बात है कि हिन्दू उन हिन्दू वीरों को तो भूल गए जिन्होंने अपनी जाने देकर मसूद मियां को मारा तथा उसकी सेना को हराया था। उलटा इस मसूद मियां की कब्र पर मन्नतें मांगने जाते हैं और टी.वी. चैनल इसे धार्मिक सद्भावना एवं धर्मनिरपेक्षता का जीता जागता प्रमाण बताते हैं।

महाराष्ट्र के एक गांव में आलीशाह की मजार है। बृहस्पतिवार के दिन हिन्दू औरतें उसे पूजती हैं। अलीशाह कौन था ?औरंगजेब के समय में अलीशाह नाम का एक मुसलमान था। वह बहुत अत्याचारी था। इलाके में उसका बहुत आतंक था। वह गांव में घूमता रहता था, जो सुन्दर हिन्दू लड़की दिखती उसे अपनी वासना का शिकार बनाता था, जिस हिन्दू सेठ साहूकार से जो धन मांगता वह उसे देना पड़ता था। जब किसी हिन्दू युवक का विवाह होता था तब नई दुलहन को पहली रात अलीशाह के साथ बितानी पड़ती थी। जो कोई इस बात को न मानता उसके परिवार को वह समाप्त कर देता था। लगभग बीस गांवों के क्षेत्र में उसका प्रभाव था। हिन्दू उसके सामने मजबूर थे। कई वर्ष तक ऐसा चलता रहा। फिर एक गांव में धनी परिवार के युवक जोरावर सिंह का विवाह हुआ। अलीशाह का सन्देश आ गया कि उसकी पत्नी को उसके पास भेज दो। जोरावर सिंह ने उत्तर भेज दिया कि उसकी पत्नी अपनी एक दासी के साथ उस रात उसके पास पहुंच जाएगी। जोरावरसिंह ने अपने एक मित्र उदयसिंह को साथ लिया। दोनों ने स्त्री का वेश धारण किया, हथियार साथ लिए और गाड़ी में बैठकर अलीशाह के यहां पहुंच गए। नशे में धुत्त अलीशाह तथा और बहुत से मुसलमान गाड़ी के पास आ गए। जोरावरसिंह और उदयसिंह ने अलीशाह तथा उसके परिवार के सभी सदस्यों को मार गिराया। मुसलमानों ने अलीशाह को शहीद की उपाधि दी और उसकी मजार बना दी। हिन्दू जोरावरसिंह और उदयसिंह को तो भूल गए, अलीशाह की कब्र को पूजने लगे।

●●●

हम तुम भांड हैं

-अभिमन्यु कुमार खुल्लर

समझदार तो इस शीर्षक पर नाराज हो जावेगा, उत्तेजित होकर सरोष स्वर में कहेगा-आपको अधिकार है कि अपने आपको भांड, गवैया-नचैया, बहुरूपिया या नौटंकीबाज कहें पर दूसरों को भांड कहने का आपको कोई अधिकार नहीं है। यदि मैं कहूं कि इस शब्द का प्रयोग महर्षि ने किया है तो आप अवाक् रह जावेंगे।

सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव का वर्णन कर उसकी सगुण और निर्गुण भक्ति का उल्लेख किया है। ऐसी भक्ति का फल यह बताया है कि ''जैसे परमेश्वर के गुण हैं, वैसे गुण-कर्म-स्वभाव अपना भी करना और जो केवल भांड के समान परमेश्वर के गुण कीर्तन करता जाता और अपना 'चरित्र' नहीं सुधारता उसका स्तुति करना व्यर्थ है। व्यर्थ शब्द का संयोजन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। महर्षि ने ''चरित्र'' का आदर्श ''परमात्मा'' को ही रखा है। इससे अधिक सबल, सार्थक, निर्दोष, निर्विवाद और कोई आदर्श हो ही नहीं सकता। जो ईश्वर स्तुति चरित्र सुधार के लिये नहीं की जाती उसका करना व्यर्थ है।

पूजा-पाठ के प्रचलित कारोबार को लगभग ४० वर्ष तक २४ घन्टे देख-सुनकर, उनके बीच रहकर, अत्यन्त सूक्ष्मता से अवलोकन करने के पश्चात् महर्षि का यह मन्तव्य, निष्कर्ष आज भी उतना ही सटीक है जितना उनके काल में था। मेरी तो अत्यन्त अल्प बुद्धि में सम्पूर्ण सत्यार्थ प्रकाश रचना का यह आधार वाक्य है।

सत्यार्थ प्रकाश में अपने मन्तव्य को स्थायित्व प्रदान कर आर्यसमाजियों को भी चेतावनी दे दी। लगभग १५० वर्ष आर्य समाज की स्थापना व सत्यार्थ प्रकाश को प्रकाशित हुए, हो चुके हैं। महर्षि के मन्तव्य को कितने आर्यसमाजियों ने समझा व अपनाया है, उसका सिंहावलोकन होना चाहिए अन्यथा आर्यसमाज और आर्यसामाजियों के रसातल की तरफ तीव्र गति से अग्रसर हो रहे कदमों को थामा नहीं जा सकता। मेरा मानना है कि महर्षि के मन्तव्य को जिस पीढ़ी ने समझा व अंगीकार किया, वह पीढ़ी ही समाप्त हो चुकी है। ग्वालियर के जिस आर्य समाज से मैं सम्बद्ध रहा, वह स्थापना के १२५ वर्ष पश्चात् निम्नतम स्तर पर भव्य भवन को लेकर खड़ा है। पतन क्रमागत हुआ और प्रारम्भ होने के पश्चात् उस पतन की गति में तेजी आई इस बिन्दु पर अभी इतना ही लिखना पर्याप्त है।

प्रसंग पर आता हूँ। आज भी प्रत्येक आर्य समाजी ताल ठोक कर कहेगा कि हम वैदिक धर्मी ही ईश्वर विश्वासी हैं। ईश्वर के सम्बन्ध में हमारा सोच ही सही है और पूजा-पद्धति भी सही है। ठीक है यदि दोनों बातें सही हैं तो हमारी संख्या वृद्धि होनी चाहिए पर स्थिति यह है कि वृद्धि कम और ह्रास ज्यादा हो रहा है। इसलिये न तो व्यक्तिगत रूप से हमें लाभ हो रहा है और न ही सामाजिक रूप से हमारी वैदिक विचारधारा को स्वीकृति मिल रही है। हम १५० वर्षों के महत्वपूर्ण आशय को जन सामान्य अथवा प्रबुद्ध वर्ग को ही अंगीकार कराने में सफल नहीं हो सके। परिणामस्वरूप पनपे वैष्णो देवी मन्दिर, बर्फानी बाबा, सत्यसांई (पुट्टपार्थी), साई बाबा (शिरडी), गायत्री मन्दिर, आसाराम बाबा, रामपाल बाबा राम रहीम, निर्मल बाबा आदि। आद्य शंकराचार्य द्वारा स्थापित चारों धाम तो थे ही, उनमें दरगाहें, विशेषकर अजमेर शरीफ भी जुड़ गई हैं। हिन्दू भक्तों की इनमें अपार श्रद्धा है, आस्था है। अपार श्रद्धा और अटूट आस्था को तोड़ने में मेरा विश्वास नहीं है, हिम्मत भी नहीं है। हम वैदिक धर्मी अपने चरित्र और आचरण से तथा वैदिक विद्वान प्रवचन और लेखन से बहुत कुछ कर सकते हैं।

यह विषयान्तरण नहीं हुआ है बल्कि मुख्य विषय पर आने से पूर्व अपना मूल्यांकन कर आगे बढ़ना उचित प्रतीत हुआ।

१५ नवम्बर २०१४ को प्लेसनटन, यू.एस.ए. आने से पूर्व विचारतंत्री जीवात्मा ने पुर्नजन्म व कर्मफल सिद्धान्त आदि में उलझी हुई थी। दो लेखों में अपना दृष्टिकोण अभिव्यक्त करने के पश्चात् भी विश्राम नहीं मिल रहा था। यहां आने पर पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के सुप्रसिद्ध ग्रंथ ''जीवात्मा'' का अध्ययन किया। इसी क्रम में सत्यार्थप्रकाश के सप्तम और अष्टम सम्मुलास का भी मनोयोगपूर्वक अध्ययन किया। दूसरे पारायण में गाड़ी समुल्लासों के क्रम पर अटक गई। यदि महर्षि का उद्देश्य केवल वैदिक धर्म की ही स्थापना होता तो प्रथम समुल्लास के बाद ही सप्तम और अष्टम समुल्लासों के विषयों को ही स्थान मिलना चाहिए था। शिक्षा, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ, सन्यास आदि विषयों में छह समुल्लास लिखने की बात तो बाद में भी रखी जा सकती थी। दो-तीन दिन बुद्धि को इसी बिन्दु पर अटके रहने दिया। सत्यार्थ प्रकाश की रचना का महर्षि का आशय समझ में आया, आत्मसात हुआ कि उनका उद्देश्य किसी प्राचीन, अर्वाचीन या नए मत को प्रस्थापित करने का नहीं था। उन्हें तो प्राचीनतम, सत्य सनातन वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना और व्यक्ति निर्माण, राष्ट्रनिर्माण का महत्वपूर्ण कार्य करना था। उसका ही धरातल तैयार करने में छह अध्याय लिखने पड़े। व्यक्ति का सही निर्माण हो गया तो उसे ईश्वर और उसकी सृष्टि को समझने की योग्यता भी प्राप्त हो जावेगी।

इस लेख में तो मैं विषय के अनुरूप ही आगे बढ़ने का प्रयास करूंगा।

देखिए, महर्षि सप्तम समुल्लास में क्या लिखते हैं :-

जो सब दिव्य-गुण-कर्म-स्वभाव और विद्यायुक्त है

जिसमें पृथिवी, सूर्यादि लोक स्थित हैं जो आकाश के समान सर्व व्यापक है। जो सब देवों का देव परमेश्वर है उसको जो मनुष्य न जानते, न मानते और न उसका ध्यान

शेष पृष्ठ.....६

thearyasamaj.org

पृष्ठ.....५ का शेष

करते हैं वे नास्तिक हैं और दु:खी होते हैं। ईश्वर की परिभाषा और उसको न समझने का फल क्या इससे भी कम शब्दों में, पूर्ण स्पष्टता के साथ समझाया जा सकता है ?

आर्यसमाज के लिये निर्धारित दस नियमों के दूसरे नियम में महर्षि ने ईश्वर को २१ गुण-कर्मों में व्याख्यात किया है। पूर्वोक्त वर्णन में (१) दिव्य-गुण-कर्म-स्वभाव (२) विद्यायुक्त (३) हिरण्यगर्भ व (४) सर्वव्यापक तत्व बताए हैं। नियमावली में पहिले दो बिन्दु पृथक रूप से रेखांकित नहीं हैं। दूसरे नियम का समापन इस वाक्यावली से किया है कि ''वह सृष्टिकर्ता है और इसकी उपासना करना योग्य है।'' इस प्रसंग का समापन सप्तम समुल्लास में महर्षि उसे 'नास्तिक' कह कर करते हैं और वह 'दु:खी' रहता है।

सामान्य जन ईश्वर में विश्वास न रखने वाले को नास्तिक कहते हैं। विद्वान वेद में आस्था न रखने वाले को नास्तिक कहते हैं। आप पूछेंगे कि दोनों में अन्तर क्या है ?दोनों में अन्तर यही है कि वेदज्ञ विद्वान वेद में चिन्हित किए गए 'ईश्वर' को, जिसकी व्याख्या में अनेक मंत्र उपलब्ध हैं, उसे ही ईश्वर मानते हैं। और सामान्य जन के लिये तो प्रत्येक वस्तु ईश्वर का स्वरूप ले लेती है जो उसके सरल, सपाट दिलो-दिमाग में यह विश्वास दिलाकर उतार दी जावे कि वह 'वस्तु' या व्यक्ति उसके सब दु:खों, कष्टों और पापों का निवारण कर देने का सामर्थ्य रखता है। चाहे वह केदारनाथ, बद्रीनाथ, काशी, देवघर व उज्जैन के मन्दिरों में योनि आकार के पात्र में स्थापित शिवलिंग ही क्यों न हो ?ईश्वर का यह स्वरूप, पढ़ने, लिखने व बोलने में कितना कुत्सित लगता है? यही नहीं, समस्त चौबीस अवतार जिनमें सांप, सूअर शामिल हैं, 'ईश्वर' हैं।

महर्षि दयानन्द ने अनेक वेद मंत्रों, उनकी व्याख्या करने वाले ब्राह्मण ग्रंथों, उपनिषदों के निचोड़ के रूप में सीधे सरल शब्दों में 'ईश्वर' को परिभाषित कर दिया है। इस परिभाषा के अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं हो सकता। मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगेश्वर कृष्ण, महात्मा बुद्ध, बाइबिल तथा कुरान में वर्णित कोई भी ईश्वर नहीं। अन्य ईश्वरों को मानने वालों की भर्त्सना ''नास्तिक'' कह कर की है। जब ईश्वरों को मानने वालों का ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान ही अधपका, अधूरा और भटकाने वाला है तो उनकी पूजा-उपासना करने वाले सुखी हो ही नहीं सकते। दु:खी ही रहेंगे।

महर्षि यहीं नही रुके। परिभाषा के क्रम को आगे बढ़ाते हुए लिखा कि सगुण और निर्गुण भक्ति क्या है?और उसका फल क्या है, महर्षि लिखते हैं ? जैसे परमेश्वर के गुण हैं, वैसे अपने भी गुण स्वभाव करना। जो केवल 'भांड' के समान गुण कीर्तन करता जाता है और अपना 'चरित्र' नहीं सुधारता उसका ईश्वर की स्तुति करना 'व्यर्थ' है। जो और व्यर्थ शब्दों का संयोजन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जरा उसके प्रभाव को अनुभव तो कीजिए ।

राजाओं और नवाबों के दरबारों में योग्य मंत्री चाहे हों न हों परन्तु भांड अवश्य रहते थे। राजाओं का मन बहलाना, मनोरंजन करना उनका काम होता था। सीमाहीन चाटुकारिता उसका अपरिहार्य अंग होता था। एक बार एक राजा के भोजन में बैंगन की सब्जी परोसी गई। राजा को सब्जी बहुत स्वादिष्ट लगी और उसने सब्जी की बहुत प्रशंसा की। भांड महोदय ने तत्काल कहा, महाराज, एक यही सब्जी है जिसके सिर पर छत्र है। राजा ने कहा - वाह-वाह क्या खूब कहा। कुछ समय पश्चात् बैंगन की सब्जी फिर राजा के भोजन में आ गई। इस बार उसने राजा के पेट में विकार पैदा कर दिया। राजा बहुत नाराज हुआ, कहा-यह सब्जी बहुत खराब है। भांड महोदय ने छक्का लगाया। महाराज, इसीलिये इस सब्जी को बेगुन (बिना गुण वाला) कहते हैं।

महर्षि ईश्वर की स्तुति ''चरित्र'' निर्माण के लिये निर्धारित करते हैं। जिस व्यक्ति ने अपनी समस्त शक्ति, ध्यान यहां तक ही हो कि ईश्वरोपासना ही चरित्र निर्माण के लिये लगा दिया हो तो वह बुराईयों की ओर आकर्षित ही नहीं होगा। उसके कल्याण का मार्ग स्वयं प्रशस्त होता जावेगा।

अन्य सभी मत (धर्म) वाले ईश्वर स्तुति का फल या लाभ यह बताते हैं कि ईश्वर स्तुति से मनोकामना की पूर्ति, पापों से, बिना फल भोगे, छुटकारा और स्वर्ग की प्राप्ति होगी। दोनों के मन्तव्यों में जमीन-आसमान का अन्तर है। महर्षि का मार्ग कठिन है, बहुत कठिन है। अन्य मत वालों का बहुत सरल। अन्य मतवाले कहते हैं कि केवल ईश्वर का नाम जपने से ही उपरोक्त तीनों फल मिल जाते हैं। बस आदमी को चाहिए ही क्या।

आज भी हजारों साधु-सन्यासी मिल जावेंगे जो नाम ''जप'' का महत्व प्रतिपादित कर, विश्वास दिला देंगे कि इतने ही कार्य से ईश्वर-पूजन की प्रक्रिया समाप्त। नाम का जाप सीधा करो या उल्टा स्वर्ग (कौन सा स्वर्ग?) का द्वार खुला मिलेगा। राम नाम की जगह 'मरा-''मरा' भी बोलोगे तब भी। क्योंकि परमात्मा अन्तर्यामी है, भक्त की भावना को समझता है। इसीलिये ये लोग ''भावना'' के महत्व की बात करते हैं।

सोमनाथ मन्दिर के परिसर में हम पति-पत्नी घूम रहे थे। कुछेक पुजारियों (पूजा के अरियों) (दुश्मनों) महर्षि ऐसी पूजा कराने वालों को यही कहते थे ने कहा कि वह हमारे लिये किसी को देवता (ईश्वर) का पाठ कर देगा। बस आपको अमुक- अमुक देवता की अमुक-अमुक राशि दक्षिणा में देनी होगी। हमने स्वयं भी देखा ऐसी पूजा चल भी रही थी। पूजा-पठ का लाभ किसे मिलेगा। उत्तर मिला ''भक्त'' को हे भगवन् कैसा ''माया'' जाल है!

ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव अपनाने का निर्देश देते हुए महर्षि ने सांकेतिक रूप से एक गुण का उल्लेख किया है कि वह न्यायकर्ता है। यह क्षेत्र ऐसा है जिसे बिना कुछ त्याग-तपस्या किए प्रत्येक मनुष्य अपना सकता है। यह गुण, सामाजिक गुणों का विकास करने का बहुत बड़ा आधार बन सकता है।

ईश्वर जाति-भेद, रंग-भेद, ऊँच-नीच, सम्पन्नता-विपन्नता, किसी भी कारण से न्याय करने में भेद-भाव नहीं करता। सृष्टि की रचना कर उसका निर्मूल्य, अपनी बुद्धि और सामर्थ्यानुकूल उपयोग करने की व्यवस्था परमात्मा ने कर रखी है। हम पूरी तरह से सृष्टि रचना का सत्यानाश करने पर तुले हुए हैं। आज हम पानी बेच रहे हैं। कल हवा बेचेंगे। पर्यावरण प्रदूषण इतना बढ़ गया है और दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है कि एक दिन ऑक्सीजन का सिलेंडर लेकर निकलना पड़ेगा। लाशों, कैमिकल्स और मानव द्वारा विसृत गंदगी से नदियां भरी पड़ी हैं। इन नदियों के जल का आचमन, स्नान-ध्यान वेद में वर्जित मोक्ष तो नहीं देगा, उदर त्वचा सम्बन्धी रोग जरूर देगा।

ईश्वर प्रदत्त सृष्टि के संसाधनों का बुद्धिपूर्वक उपयोग भी, ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव अपनाने वाले के लिए महर्षि के मंतव्य की पूर्ति करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

ईश्वर भ्रष्टाचार नहीं करता, पाप नहीं करता। खाद्यान्न व औषधियों में मिलावट नहीं करता। ईश्वर कन्या-भ्रूण हत्या नहीं करता। क्या आप इन दुर्गुणों से दूर, बहुत दूर, जाकर ईश्वर के निकट, अति निकट आने का प्रयास भी नहीं करना चाहेंगे ?या इन दुष्कर्मो में लिप्त रहकर ''भांड'' के समान स्तुति और प्रार्थना ही करते रहेंगे ?

-५७७६ वैलेजा ड्राइव प्लेसन्स
कैलिफोर्निया
९४५८८ यू.एस.ए.

आर्य समाज वृन्दावन में आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया।

आर्य समाज का स्थापना दिवस आर्य समाज वृन्दावन का वार्षिकोत्सव एवं नवसंवत्सर के अवसर पर आर्यसमाज वृन्दावन में यज्ञ का आयोजन किया गया। समाज के प्रधान व यज्ञाचार्य आचार्य सोहनलाल आर्य ने इस अवसर पर आर्यसमाज व स्वामी दयानन्द जी के बताये गये मार्गो पर प्रकाश डाला व स्वामी जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश को जीवन में एक बार पढ़ने व उसे जीवन में उतारने के लिए प्रेरित किया।

समाज के मंत्री राजेन्द्र प्रताप सिंह आर्य ने शिक्षा के बदलते स्वरूप पर अपने विचार प्रस्तुत किए, उन्होंने गुरूकुल शिक्षा पद्धति को उचित बताते हुए मैकाले शिक्षा पद्धति को (जो वर्तमान समय में बच्चों को दी जाती है) बेकार बताया और कहा कि गुरूकुल का अर्थ यह है कि गुरू का कुल जिसमें गुरू शिष्य को शिक्षा, सदाचार आदि से शिक्षित करता है।

स्वामी दयानन्द सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष रविप्रकाश यादव ने कहा कि मथुरा जनपद स्वामी दयानन्द जी की दीक्षा गुरू श्री विरजानन्द जी की स्थली है। यहां पर अनेकों दिव्य आत्माओं ने जन्म लिया व बुराईयों को खत्म किया है। भगवान श्री कृष्ण की जन्म स्थली होने के बावजूद इसके यहां शराब की बिक्री जोरों पर की जाती है। दयानन्द सेना जनपद में शराब पर पूर्णत: प्रतिबन्ध के लिए संघर्ष करेगी।

दयानन्द सेना के नगर अध्यक्ष कृष्णदेव चौधरी ने आर्य समाज के विस्तार की आवश्यकता व कुरीतियों को दूर करने की व युवावर्ग को आगे आने के लिए प्रेरित किया। श्री चौधरी ने कहा कि आज के युग में युवा नशे में मग्न होता जा रहा है, इस प्रकार की लत को युवाओं से छुडाना होगा।

इस विचार गोष्ठी में गुरूकुल के प्राचार्य डॉ. राजेन्द्र सिंह स्नातक, महावीर सिंह आर्य, महेश चन्द्र स्नातक, दयानन्द सेना के मीडिया प्रभारी, राहुल यादव, गौरव शर्मा, रघुनाथ सिंह आर्य, धनंजय सैनी, गिरिराज सैनी, विवेक महाजन, मोहित आर्य आदि उपस्थित थे।

आचार्य सोहन लाल आर्य
प्रधान
आर्य समाज, वृन्दावन

thearyasamaj.org

पृष्ठ.....१ का शेष

का संयोजन किया।

दिल्ली में गुप्त रूप से ठहरे, महर्षि से नाना साहब, लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे मिले। महर्षि ने कहा यदि क्रांति आन्दोलन का सही समय पर प्रयोग हुआ तो देश स्वतंत्र हो जायेगा।

आँसू भरे नेत्रों से महारानी ने ओजपूर्ण भाषा में महर्षि से आशीर्वाद मांगा। कहा- भले ही मैं लड़ते-लड़ते स्वदेश हित बलिदान हो जाऊँ। महर्षि ने कहा- देवी! शरीर नाशवान् है, स्वदेश हित में मरते नहीं, अमर हो जाते हैं। अतः तलवार उठाओ - फिरंगियों से युद्ध करो।

महर्षि ने ११०१/- गोविन्दराय वाले और ११०१/- महारानी लक्ष्मीबाई वाले तथा ६३३ रूपये जन साधारण से मिले, कुल २८३५/- रूपये नाना साहब को देते हुए कहा- ''जन साधारण का नेतृत्व करना, और आग लेकर खेलना, दोनों ही खतरनाक हैं। मामूली सी भूल से ही सत्यानाश हो सकता है। अतः सम्भलकर चलो। स्वयं पूर्ण शक्ति से साधु संगठन का काम आरम्भ कर दिया''। (जाटवीरों का इतिहास कैप्टन दिलीप सिंह अहलावत, पृष्ठ-६०५ पर)

दिल्ली के मासिक पत्र ''मधुर लोक'' मार्च १९७१ में यह प्रकाशित हुआ। लखनऊ से प्रकाशित पत्र ''आर्यमित्र'' में भी मार्च १९७६ में इसका प्रकाशन हुआ।

महर्षि की क्रांति से रूष्ट होकर अंग्रेजों ने राजस्थानी राजाओं, ब्राह्मणों से मिलकर भयंकर षडयंत्र से महर्षि को कालकूट विष पिलवा दिया। चिकित्सा भी नहीं होने दी। डा. का शीघ्र तबादला कर दिया।

भारत सरकार ने आजादी आन्दोलन के संदर्भो की प्राप्ति के लिये कुछ शीर्ष वैज्ञानिकों को इंग्लैंड भेजा था। उनमें एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक राजीव दीक्षित भी थे। इनके मैंने तीन प्रवचन- १. विक्टोरिया पार्क- मेरठ में जून २००५ में सुना था, जहां पांच सात हजार श्रोता उपस्थित थे। २ घंटे तालियों की तड़गड़ाहट के बीच रात्रि के ११ बजे तक जन समुदाय हथेली बजाता प्रवचन सुनता रहा। द्वितीय प्रवचन ११ मार्च २००७ में आर्ष गुरूकुल, बड्लूर, कामारेड्डी, आ. प्र. में सुना था। सभा के बाद हमारा परस्पर विचार विमर्श भी हुआ था। तृतीय प्रवचन २६ मई २००७ में मंगलवार की शाम मंगल पाण्डे चौक, मेरठ में रात्रि के ११:३० तक सुना- जिसे मैंने तत्काल लिपिबद्ध कर लिया था। जिसे आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ। तीनों जगहों का विषय था- ''१८५७ की क्रांति :-

स्वाधीनता आन्दोलन और महर्षि स्वामी दयानन्द''।

(प्रखर प्रवक्ता- राजीव दीक्षित- वर्धा, महाराष्ट्र)

२६.५.२००७ मंगलवार।

श्री राजीव दीक्षित कहते हैं- मैंने ३-४ वर्ष इंग्लैंड के इण्डिया हाउस और पुरातत्व संग्रहालय में १८५७ स्वाधीनता आन्दोलन के प्रपत्र देखे हैं। लार्ड मैंकाले अपने पिता को पत्र लिखता है कि ''हमें भारत की संस्कृति-शिक्षा-सभ्यता और अर्थव्यवस्था का नाश करना है, जिससे भारत के लोग अपना असली इतिहास नहीं जान सकेंगे। उनमें आत्म गौरव नहीं होगा।'' उन्होंने इतिहास में गलत सलत जोड़कर उसे विकृत कर दिया है। सारे इतिहास में कहीं प्रजा का जिक्र नहीं मिलता है। भारत की प्रजा का इतिहास राजाओं से ज्यादा गौरवशाली रहा है।

सर टामसरों १६२८ में भारत आया था। जिसने गांव दर गांव, घर घर घूमकर पता चलाया था। गांवों की बड़ी सुन्दर व्यवस्था थी। उस समय देश में ७ लाख ३२००० हजार गांव थे। उस समय फैसला कर्म के आधार पर नहीं, धर्म के आधार पर होता था। १. एक गांव का नायक सरपंच, १०० गांवों का नायक सामन्त, १००० गांव का नायक राजा, १०,००० गांव का नायक महाराजा, १ लाख गांव का नायक सम्राट, ७ लाख गांव का नायक चक्रवर्ती सम्राट होता था। वहां कानून नीचे से बनते थे, यही गणतंत्र था।

''अंग्रेजों ने कानून ऊपर से शुरू कर दिये''

१८५७ की क्रांति के ५ मुख्य केन्द्र थे, मेरठ-दिल्ली-झांसी-कानपुर-बिठूर। बिठूर तात्यां का गांव था। बिठूर में अंग्रेजों ने ३ वर्ष में ४५००० सैनिक मौत के घाट उतारे। तांत्या को धोखेबाजी से मरवाया। ८ अप्रैल १८५७ को कलकत्ते में मंगल पाण्डे को फांसी दे दी।

महर्षि का मेरठ का क्रांति धरा से बहुत गहरा संबंध था। मेरठ ही महर्षि की क्रांतिभूमि है। यहीं से उत्तर प्रदेश में दयानन्द ने घूम घूम कर जनता में राजनैतिक भाव भरा। १० मई १८५७ को मेरठ में क्रांति का जन्म दयानन्द की ही देन थी। महर्षि इस क्रांति नींव के पत्थर थे। लंदन की लाइब्रेरी में मैंने स्वयं देखा है। एल.आई.यू. की भारत में, भारतीयों और दयानन्द पर गहरी नजर थी। एल.आई.यू. ही लंदन में क्रांति की प्रतिदिन की कार्यवाही भेजता था। दादा भाई नौरोजी अंग्रेजों के चापलूस प्रवक्ता थे, स्वामी जी से मिलकर उनके विचार बदले।

१८५५ से लेकर १९४५ तक के प्रपत्र मैंने देखें है। अंग्रेज स्वामी जी के पीछे पीछे लगे रहते थे। स्वामी जी गांव गांव, नगर-नगर, डगर-डगर में धर्म की रक्षा और राष्ट्र-रक्षा का उपदेश देते थे। अंग्रेजों ने बोर्ड बना रखा था- कि स्वामी जी को कैसे बांधकर रखा जाये। स्वामी जी संस्कृत बोलते थे, अंग्रेज संस्कृत भाषा समझते नहीं थे। लंदन में संस्कृत के विद्वान से अर्थ पूछा करते थे।

स्वामी जी के जीवन का ५७ से १९६० तक ३ वर्ष का इतिवृत्त नहीं मिलता। यह एल.आई.यू. की रिर्पोट पर आधारित है। लिखने से पूर्व महर्षि ने हजारों बार स्वराज्य शब्द बोला है। अंग्रेज भगत सिंह का भी पता चलाते रहते थे। लंदन में उन सब गांवों की फेहरिस्त है जहां जहां स्वामी जी जाते थे। ३-४ साल तक महर्षि ने क्रांति की ज्वाला जगाई।

सिंधिया ने अंग्रेजों से संधि करके रानी लक्ष्मीबाई को मरवा दिया था। आज ये ही सिंधिया भारत सरकार में मंत्री बने रहते हैं। रानी से अंग्रेजों की तीन लड़ाई हुयी, तीनों में अंग्रेज हारे। यह एक लौह नारी थी। निःस्वार्थ और दृढ़ थी। रानी ने माना - संघर्ष मैंने महर्षि से सीखा है। कर्नाटक की चिनम्मा रानी में भी स्वामी जी के विचारों की दृढ़ता थी। केवल चिन्म्मा रानी ने महर्षि के राष्ट्र विचारों की दृढ़ता का नाम सुना था, उन्हें देखा नहीं था।

स्वामी जी के ६ लाख, ३२००० क्रांतिवीर शिष्य थे। जफर को उस समय किसी ने नेता नहीं माना था। वह तो मरा बैठा था। महारानी ने जफर को अपना नेता नहीं माना। बहादुर शाह जफर ने कोई क्रांति नहीं की थी। वह बूढ़ा था।

१८८१ की जनगणना में अल्पसंख्यकों का जिक्र अंग्रेजों ने चलाया था- क्योंकि उन्हें महर्षि दयानन्द का भारी भय था। वे महर्षि से भयभीत थे। आरक्षण का प्रारम्भ भी अंग्रेजों की बांटो नीति का सूत्रपात था। उन्होंने सिक्खों को हिन्दुओं से अलग रहने की कुचेष्टा भी की थी। उन्होंने कहा- सिक्ख हिंदुओं से भिन्न जाति है। अंग्रेजी सरकार सिखों को अलग अधिकार देकर उन्हें ऊँचा उठाना चाहती है।इसलिए सिक्खों को चाहिए वे हिन्दुओं से अलग होकर सरकार से अपने अधिकारों की मांग करें।'' अन्यथा सिक्खों को सदा हानि ही पहुँचती रहेगी।

विक्टोरिया ने डलहौजी से कहा- दयानन्द कोई महत्वपूर्ण संगठन बनाने वाला है- वह आर्य समाज है। महर्षि ने स्वराज्य स्थापना की बात कही हैं। इसलिए हमने इनसे अल्प संख्यकों को तोड़ा है। विक्टोरिया ने १८६४ में आर्य समाज को कमजोर करने का तय कर लिया था, नहीं तो बहुत बड़ी बगावत की शुरूआत हो गई हैं। निरंकारी -बौद्ध-जैन सब आर्य समाज के साथ थे। भारतीय इस संगठन को तोड़ो, कमजोर करो और राज्य करो। यह आरक्षण प्रथा भारतीयों को बांटने का अंग्रेजी कुचक्र है।

दीक्षित कहते हैं- समय है आर्य समाज को पहल कर देनी चाहिए- तभी भारत का असली इतिहास सामने आयेगा, इसी इतिहास से हमारे युवक भारत के भविष्य का असली इतिहास का निर्माण करेंगे। केवल दयानन्द ही देश की स्वतंत्रता का निर्माता है। अंग्रेजों ने आर्य समाज से डरकर इसे कमजोर करने के लिए आरक्षण और अल्पसंख्यकों का बंटवारा कर भारत को अपनी आन्तरिक लड़ाई में फंसा दिया है। जिसे आपके नेता अपनी कुर्सी बचाने की खातिर प्रयोग में ला रहे हैं। देश का भविष्य खतरे में खेल रहा है। इससे बचने का एक ही मार्ग है, वह है लंदन के प्रपत्रों के आधार पर अपना असली इतिहास लिखना। भारत से गये प्रपत्र वहां इतने है जिससे कम से कम २५०० इतिहास पुस्तक लिखी जा सकेंगे।

लंदन के प्रपत्रों के आधार पर दीक्षित ने बताया-दिल्ली यमुना पर लौह पुल के पास जो ''पोस्ट आफिस'' था वह क्रांतिकारियों का अड्डा था तथा मेरठ की क्रांतिधरा का संयोजक अकेला केवल महर्षि दयानन्द था।

दीक्षित ने अपने २:३० घंटे के प्रवचन में यह भी कहा-आप लोग यदि मेरे लंदन आवागमन का थोड़ा प्रबंध कर दें तो लंदन से शेष सब प्रपत्र आपको लाकर दूंगा।

इस सभा की अध्यक्षता स्वामी विवेकानन्द, कुलपति प्रभात आश्रम, भोलाझाल कर रहे थे। मैं स्वामी जी के बराबर में बैठा था। इस प्रवचन को मैंने स्वयं लिपिबद्ध कर लिया था। स्वामी जी ने दीक्षित जी को विश्वास दिलाया कि आप जब लंदन जाओ मुझे सूचित करना आपके मार्ग व्यय में सहायक रहूँगा।

महर्षि की इस क्रांति में महर्षि शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा, वीर सावरकर, देवता स्वरूप, भाई परमानन्द, रामप्रसाद बिस्मिल, शहीदे आजम भगत सिंह, पंजाब केशरी लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, चन्द्रशेखर आजाद, गणेश शंकर विद्यार्थी आदि प्रखर राष्ट्रभक्तों ने महर्षि की प्रेरणा से स्वाधीनता आन्दोलन में अद्भुत वीरतापूर्ण भूमिका निभाई हैं।

झेलम जनपद में जन्म प्राप्त कविवर चमनलाल आर्य पंजाब में महर्षि दयानन्द जी सरस्वती जी के आगे-पीछे, चलते फिरते मस्ती से गीत गा गाकर कहते रहते थे-

गिने जायं मुमकिन है सहारा के जर्रे,
समुन्दर के कतरे, फलक के सितारे।
मगर तेरे अहसां दयानन्द स्वामी,
है कैसे मुमकिन गिने जाएं सारे।।
(चमनलाल आर्य)

(चमन लाल आर्य, आर्य जगत् महर्षि बोधांक १०.२.१९९१ पृष्ठ-५५)

मालदा बाग,
पुरानी गुड़ मण्डी, शाहपुर
जनपद- मुजफ्फर नगर
मो. ९९२७५७५७७७

thearyasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६८३७४०२१६२, सम्पादक-६५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

.....

आर्य समाज चौक इलाहाबाद में आर्य समाज स्थापना दिवस सम्पन्न

२१.३.१५ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को आर्य समाज चौक इलाहाबाद में आर्य समाज स्थापना दिवस श्री पंकज जायसवाल की अध्यक्षता में मनाया गया। समारोह में श्री शैलेन्द्र कुमार संसद सदस्य एवं श्री सत्यवीर विधायक ने अपने भाषणों में आर्य समाज आन्दोलन को निरन्तर तीव्रगति से चलाने की आवश्यकता पर बल दिया। उत्सव में आर्य समाज चौक के प्रधान श्री श्याम किशोर आर्य सिद्धान्शास्त्री एवं मंत्री पी.एन. मिश्र तथा श्री लाल बहादुर शर्मा वरिष्ठ सदस्य, डा. बी.पी. सागर, सोहन जी पाण्डे आदि उपस्थित थें।

आर्य समाज खोजवां भेलुपुर वाराणसी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज खोजवां भेलुपुर क्षेत्र वाराणसी का वार्षिक उत्सव दिनांक १४ व १५ मार्च २०१५ को उल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

उक्त समारोह में वेदों के प्रकाण्ड विद्वान डा. ओमवीर शास्त्री दिल्ली, श्री सुमेश आर्य, मिर्जापुर, रीता जायसवाल, श्री बेचन सिंह आर्य, उप प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. श्री रमाशंकर आर्य, जौनपुर आदि विद्वानों ने सम्बोधित किया।

उत्सव को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने में श्री उदय आर्य, श्री राजकुमार आर्य, श्री कन्हैयालाल आर्य, श्री रमेश कुमार निर्मेष, श्री राधेश्याम आर्य, श्री मनोज कुमार एड. व डा. अरूण कुमार श्रीवास्तव आदि ने सक्रिय सहयोग दिया। क्षेत्रीय जनता ने भी भारी संख्या में अपनी उपस्थित दर्ज करायी।

नववर्षोत्सव एवं आर्य समाज स्थापना दिवस पर 101 कुण्डीय यज्ञ

आर्य समाज श्रृंगार नगर लखनऊ ने दिनांक २१.३.१५ को प्रातः ७:३० बजे से ६:३० बजे तक श्रृंगार नगर पार्क में १०१ कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ में नववर्ष की आर्य पर्व पद्धति के अनुसार विशेष आहुतियां डाली गयी। यज्ञ का संचालन डा. रूपचन्द्र दीपक ने किया। पौरोहित्य श्री गिरीश जी ने किया। यज्ञ के अनन्तर आचार्य वेदव्रत अवस्थी सम्पादक आर्य मित्र साप्ताहिक, प्रसिद्ध शिक्षाविद् डा. मोहन लाल अग्रवाल, मंत्री आर्य समाज, लाल बाग तथा श्रीमती कुशल सहगल एवं श्रीमती सलूजा का शाल उठाकर सम्मान किया गया।

मंत्री
आर्य समाज, श्रृंगार नगर,
लखनऊ

स्वास्थ्य चर्चा–

आम बीमारियों में अपनाये कुदरत के नायाब नुस्खे

अक्सर हम सेहत संबंधी छोटी छोटी परेशानी में भी डाक्टर के पास चले जाते हैं। मगर आप प्रकृति के करीब है तो उसके पास हर मर्ज की दवा है। ये दवाएं हर्बल के रूप में उपलब्ध है। हर्बल स्वास्थ्य संबंधी छोटी दिक्कत को बिना किसी साइड इफेक्ट के दूर करता है। हालांकि किसी भी इलाज के लिए जरूरी है कि मर्ज की वजह को ही दूर रखा जाये। ऐसे में कुछ हर्बल वाकई कमाल के हैं जो सामान्य रोग को दूर करते हैं।

आयली और एक्ने युक्त त्वचा सामान्य समस्या है। मगर एलोवेरा जूस लगाने से त्वचा में आराम मिलता है और ठंडक का अहसास होता है। टी-ट्री आयल बेहतरीन एंटी बैक्टेरिलय क्लींजर है। घर में बनाए गए पारंपरिक उबटन में टी-ट्री आयल की कुछ बूंदे मिलाकर त्वचा पर लगायें। यह प्राकृतिक रूप से त्वचा का उपचार करता है।

त्वचा के जलने पर हम बेहद जलन महसूस करते हैं और ज्यादातर पानी या बर्फ का इस्तेमाल करते हैं। एलोवेरा जेली ऐसे में बेहद फायदेमंद है। यहां तक कि एलोपैथी में भी एलोवेरा युक्त दवाइयां और क्रीम दी जाती है। बंद नाक, बुखार जैसा महसूस होना, एलर्जी और हल्की खांसी में इकीनिसिया बेहद फायदेमंद है। यह कोल्ड व फ्लू के लक्षण, टांसिल, इंफेक्शन और एलर्जी के कारण सिरदर्द से राहत दिलाने में मदद करता है। यह हर्ब गले में सूजन को कम करता है। इम्यून सिस्टम को भी सही रखता है।

कई महिलाओं में मेनोपाज के दौरान उन्हें अचानक बहुत ज्यादा पसीना आने लगता है। घबराहट व बेचैनी महसूस होने लगतीहै। ऐसे में प्रीमरोज आयल कैप्सूल के रूप में लेने से इसमें आराम मिलता है। वैलेरियन रूट बेचैनी को कम करता है और सिरदर्द में भी फायदेमंद हैं।

माउथ अल्सर में एलोवेरा जेल बेहद कारगर है। सोने से पहले इसे सीधे अल्सर पर लगायें आराम मिलेगा। कम मात्रा में लिकोरीस भी प्राकृतिक बाम है जो काफी असरदार है।

सांस की बदबू, साइनस और मसूढ़ों में संक्रमण, बिना पानी के उपवास, अपच और बुखार के कारण होता है। पुदीने के पत्ते से बना माउथवाश इससे छुटकारा देता है। खाने के बाद इलाचयी और दालचीनी चबाने से भी इसमें फायदा मिलता है। चीनीयुक्त पेय पदार्थो से दूर रहे। लौंग का तेल और चुटकी भर नमक मिलाकर दांतों पर लगाने से दांतो की सुरक्षा होती है। सांस की बदबू रोकने के लिए नियमित ब्रश और कुल्ला करें।

ग्रीन टी में एंटीएजिंग गुण होते हैं। साथ ही यह बाउल्स सूजन युक्त घाव, ब्लड शुगर, ब्रेस्ट कैंसर, लिवर कैंसर, प्रोस्टेट कैंसर, पैंक्रियाटिक कैंसर, त्वचा कैंसर, कार्डियो डिजीज और त्वचा संबंधी परेशानी दूर करता है। डैंड्रफ की परेशानी से हम हमेशा परेशान रहते हैं। इसमें पुदीना व रोजमेरी हर्बल्स बेहद फायदेमंद हैं।

एलोवेरा को डिटाक्सिलायर भी माना जाता है। यह अपच और गैस जैसी समस्या से भी छुटकारा दिलाता है। तुलसी के पत्ते का सेवन सरदर्द में आराम पहुँचाता है। एचआईवी जैसे रोग में भी एलोवेरा और ग्रीन टी फायदेमंद है।

उत्तराखंड टाइम्स से साभार

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।